ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

# वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 18 कुल पृष्ठ-8 31 जनवरी से 6 फरवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-06


## वैदिक पथ के पथिक चौ. मित्रसेन आर्य ने सदैव गुरुकुलों एवं आर्य समाज की गतिविधियों के लिए दिया महत्त्वपूर्ण योगदान

– स्वामी आर्यवेश

## चौ. मित्रसेन आर्य महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे

– ओम प्रकाश धनखड़

## मेरे पूज्य पिता जी के आदर्श मेरी प्रेरणा के स्रोत हैं

– कै. अभिमन्यु

वैदिक पथ के पथिक चौ. मित्रसेन आर्य, आर्य समाज की एक ऐसी महान विभूति थे जिन्होंने अपने जीवन में आर्य सिद्धान्तों का पालन करते हुए संघर्ष एवं परिश्रम करके पूरे देश में ख्याति प्राप्त की। एक साधारण जीवन से अपनी यात्रा शुरू करने वाले मित्रसेन जी अपने व्यवसाय एवं सामाजिक सेवाओं को आकाश की ऊँचाइयों तक ले जाने में सफल हुए। उनकी 8वीं पुण्यतिथि की तिथि पर 27 जनवरी, 2019 को उनके पैतृक गांव खान्डाखेड़ी, जिला–हिसार, हरियाणा में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में क्षेत्र के लगभग 700 प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ वितरित करके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस श्रद्धांजलि समारोह में हरियाणा के कृषि मंत्री श्री ओम प्रकाश धनखड़, वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु (चौ. मित्रसेन जी के सुपुत्र), छपरौली के विधायक श्री सहेन्द्र सिंह रमाला, हरियाणा पिछड़ा वर्ग कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र जांगड़ा, पूर्व सांसद डॉ. अरविन्द शर्मा आदि राजनेताओं के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कन्या गुरुकुल रुड़की की आचार्या डॉ. सुकामा जी, आचार्य ब्रह्मपुत्र जी, आचार्य आत्म प्रकाश जी, डॉ. बलवीर जी आचार्य पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक आदि महानुभाव सम्मिलित हुए। परममित्र मानव निर्माण संस्थान के अध्यक्ष चौ. मित्रसेन जी के बड़े सुपुत्र कै. रुद्रसेन ने समारोह की अध्यक्षता की।

इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि चौ. मित्रसेन आर्य जी ने सदैव आर्य समाज के गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य समाज की विविध गतिविधियों को संचालित करने में अपना ऐतिहासिक योगदान दिया। वे आर्य समाज के प्रसिद्ध दानवीर थे। उन्होंने उड़ीसा, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में अनेक गुरुकुलों की स्थापना करवा करके हजारों परिवारों को आवाद किया और उन परिवारों से आने वाले निर्धन छात्रों को शिक्षित करके रोजगार के योग्य बनाया। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि जिन बच्चों ने कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा था वे हजारों बच्चे आज केन्द्रीय विद्यालयों तथा अन्य सरकारी विद्यालयों में अध्यापक का कार्य कर रहे हैं और उनके परिवार आर्थिक रूप से शक्ति सम्पन्न हो चुके हैं। इसी प्रकार चौ. मित्रसेन जी ने देश के अन्य भागों में चल रहे गुरुकुलों, आश्रमों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं को भी आर्थिक सहयोग प्रदान करके यश कीर्ति प्राप्त की। आज उनकी स्मृति में दी जाने वाली छात्रवृत्ति भी उनके द्वारा प्रारम्भ की गई समाजसेवा की एक कड़ी है। परममित्र मानव निर्माण संस्थान और उसके अध्यक्ष कै. रुद्रसेन जी बधाई के पात्र हैं कि वे अपने पूज्य पिता के व्रतों को न केवल पूरा कर रहे हैं बल्कि आगे बढ़ा रहे हैं। वेद के मन्त्र **अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः। जाया पत्ये मधुमतीं वाचंवदतु शन्तिवान्** को चरितार्थ कर रहे हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने चौ. मित्रसेन जी के परिवार की भी इस बात के लिए प्रशंसा की कि आज भी इस परिवार में जो संगठन की भावना, परस्पर प्रेम एवं खान–पान एवं विचारों की पवित्रता देखने को मिलती है वह गृहस्थियों के लिए अत्यन्त अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक है। ऐसे परिवार ही सदैव समाज में उन्नति करते हैं और सम्मान पाते हैं।

हरियाणा के कृषि मंत्री श्री ओम प्रकाश धनखड़ ने अपने भाषण में कहा कि चौ. मित्रसेन आर्य महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुयायी थे। उन्होंने जहाँ जीवन में परिश्रम एवं पुरुषार्थ को अपनाया वहीं शौर्य एवं तेज भी उनके व्यक्तित्व में सदैव विद्यमान रहा। जिस निष्ठा के साथ उन्होंने अपने परिवार को संस्कारित बनाया उतने ही पुरुषार्थ के साथ उन्होंने अपने व्यवसाय को विकसित किया और अन्याय के खिलाफ जब आवश्यकता पड़ी हो तो जेल जाने के लिए भी वे सदैव उद्यत रहे, इससे उनके शौर्य का परिचय मिलता है। जिस व्यक्ति में ये गुण विद्यमान होते हैं वह निश्चय ही समाज का एक आदर्श व्यक्तित्व बनता है। श्री धनखड़ जी ने छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि कुछ पैसों के रूप में छात्रवृत्ति लेकर ही वे प्रसन्नचित्त न हो जायें बल्कि चौ. मित्रसेन जी के जीवन के उन अमूल्य आदर्शों को भी अपने जीवन में उतारें जिनके कारण मित्रसेन जी एक साधारण इन्सान से महापुरुष बन गये थे।

हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु ने अपने पूज्य पिता को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मेरे पिता जी आज भी मेरे मार्ग दर्शक हैं, उनके आदर्शों को मैं अपनी प्रेरणा का स्रोत मानता हूँ। उन्होंने कहा कि वे 1957 में हिन्दी सत्याग्रह में जेल गये। उस समय हम सभी भाई–बहन छोटे थे। परन्तु सन्

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

# धर्म शहीद बाल हकीकतराय और बसन्त पंचमी

– पं. नन्दलाल निर्भय

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारतवर्ष) ईश्वर भक्त धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था। उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद हकीकतराय। हकीकतराय का बलिदान मोहम्मदशाह रंगीला के शासन काल में बसंत पंचमी के दिन 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ बसंत पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाते हैं।

हकीकतराय का जन्म 1728 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानतावश हकीकतराय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया। हकीकतराय के माता–पिता धार्मिक एवं ईश्वर भक्त थे। इसलिए हकीकतराय भी धार्मिकवृत्ति का था। हकीकतराय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। यह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) इस पर बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकतराय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीतराय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकतराय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकतराय को गालियाँ दी और बुरी तरह से पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकतराय ने उसे सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकतराय को पुचकारकर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकतराय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकतराय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत कर दी।

उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकतराय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी किया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकतराय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके नगर के हाकिम अमीरबेग को सौंप दिया। अमीरबेग एक शरीफ आदमी था। उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीरबेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सकेदखान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौंरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे तथा नवाब से हकीकतराय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत की सुन्दर सूरत कम उम्र को देखकर हकीकतराय से खुश होकर कहा –

**बाल हकीकतराय! मान तूँ बात एक बेटा मेरी।**
**मुसलमान बन जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।**
**अपनी सुन्दर बेटी के संग, निकाह करा दूँगा।**
**अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूँगा।**
**रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।**
**सोच–समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।**
**पछतायेगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।**

नवाब की बातें सुनकर हकीकतराय ने गम्भीरतापूर्वक नवाब से पूछा– 'नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं?इन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?नवाब ने सिर नीचा करके कहा – 'बेटा हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा, मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवनभर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकतराय, अब तू ठीक तरह सोच समझ कर उत्तर दे बेटा।'

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकतराय मुस्कराते हुए बोला–

**यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनियाँ में आता है।**
**वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।**
**जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।**
**वह घोर नर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।**
**मैं राम–कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।**
**लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।**

हकीकतराय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया और हकीकतराय पर रौब जमाते हुए बोला –

**तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।**
**मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।**
**गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।**
**तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।**
**तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।**
**छोटी सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।**

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला –

**तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।**
**मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।**
**अमर आत्मा तन नश्वर है, वेद शास्त्र दर्शाते हैं।**
**धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।**
**मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।**
**इस दुनियाँ का हर नर–नारी, अत्याचारी बतलायेगा।।**
**मेरा यह बलिदान दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।**
**इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।**
**धर्मवीर, बलवानों की गाथा, नर–नारी गाते हैं।**
**तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।**

हकीकतराय की निर्भीकता देखकर नवाब आने से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकतराय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकतराय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकतराय की कम उम्र तथा सुन्दरता को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकतराय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा – ''अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए। जल्लाद ने अपने आंसुओं को पोंछकर तलवार उठाकर हकीकतराय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकतराय का सिर कटकर लुढ़क गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकतराय जिसने अपना सिर कटवा कर भारत माता का सर (मस्तक) संसार में ऊँचा कर दिया जब तक सूरज, चाँद–सितारे और पृथ्वी रहेगी। यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकतराय का बलिदान मुगलबादशाह शाहजहा के शासनकाल में हुआ था। तथा शाहजहाँ ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है।

शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 में हुई थी तथा हकीकतराय का बलिदान सन् 1734 में हुआ था। फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया?वास्तव में यह सब मुसलमान शासकों एवं इतिहासकारों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की एक सोची–समझी चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्र से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लाल किले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पीये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउसा को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यों! आज भारत में छूआछूत, ऊँच–नीच, जाति–पाति का बोल–बाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है, भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात–दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु–पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद बाल हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देशभक्त युवक–युवतियों की आवश्यकता। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है –

**हे भगवान! दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।**
**भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।**
**वैर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।**
**धर्मवीर, ईश्वर विश्वासी, आन–बान के हो जो सच्चे।।**
**जिसमें ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहाए।**
**भूखा नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर न आए।।**

– ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा

## वीर हकीकत राय

– पं. नन्दलाल निर्भय

**धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।**
**भोला भाला प्यारा बालक, मृत्यु गले से शीघ्र लगाया।**
**तुर्कों का आतंक बढ़ा था,**
**जबरन मुस्लिम बना रहे,**
**चोटी यज्ञोपवीत देखते,**
**सब मिलकर के सता रहे।**
**आर्य धर्म जाने न पाए, सच्चा उसने प्रण अपनाया।**
**धर्मवीर था वीर हकीकत, देश, धर्म पर प्राण गंवाया।।**
**भय आतंक दिखा के हारे,**
**तब लालच का जाल बिछाया,**
**वीर अड़ा था आन पे अपनी,**
**सर अपना था नहीं झुकाया।**
**अधिकारी शिसियाए मन में, हाथों में हथियार उठाया।**
**धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।**
**शीश चाहते हो तुम ले लो,**
**इसका कोई नहीं मुझे गम।**
**धर्म न दूँगा मरते दम तक,**
**सच्चा जानो निश्चय मम।**
**धर्म जाति पर बलि–बलि जाऊँ, इतना कहकर मृत्यु बुलाया।**
**धर्मवीर था वीर हकीकत, देश धर्म पर प्राण गंवाया।।**
**–ग्राम व पो.–बहीन, जनपद–फरीदाबाद, हरियाणा**

## नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

# 'ऋतुराज बसन्त'

– सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल–कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुज्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण–शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव–किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख–शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव–छटा नव–सौन्दर्य एवं नव–आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द–मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव–विकासित पुष्प–दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव–समाज नाच–रंग, गायन–वादन आदि नाना आमोद–प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव–जीवन में नहीं अपितु पशु–पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव–अभिलाषा, नवआशा, नव–चेतना, नव–जागरण एवं नव–स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते–पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव–संकल्प का शुभ–संदेश दिया है। रीति–कालीन कवियों को तो पग–पग और डगर–डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए नव–साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकराः।'' छायावादी युग की प्रतिनिधि कवियित्री महावेदी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है,'' धीरे–धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,'' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलतः वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा–पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अतः वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुतः सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, ''वीरों का कैसा हो बसन्त'' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण–प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

**ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे।**

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते–हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते–हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दुःख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुनः बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव–भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास–विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव–जागरण नवोत्साह, नव–चेतना, नव–प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन–जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन–जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट–पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्रज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अतः हार्दिक दुःख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन–धान्य–समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुनः अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुनः विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अतः ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आज्ञामय, सुख–सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रातः स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम–राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुनः सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट–काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

● **– डी–113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली–110087**

पृष्ठ 1 का शेष

# वैदिक पथ के पथिक चौ. मित्रसेन आर्य जी की 8वीं पुण्यतिथि

1966 में जब वे गोरक्षा आन्दोलन में जेल गये तो मेरे बड़े भाई कै. रुद्रसेन जी उस समय 11 वर्ष के थे। पिता जी उन्हें भी अपने साथ जेल ले गये। उनके पीछे हमारी माता जी ने पिता की भूमिका भी निभाते हुए हमारा पालन–पोषण किया, ये संस्मरण हम कभी भूल नहीं सकते। पिता जी प्राणी मात्र के प्रति मित्र की भावना रखने की सदैव हमें प्रेरणा देते रहते थे। आज हमारे बड़े भाई कै. रुद्रसेन जी परिवार के मुखिया हैं और उनके मार्गदर्शन में पूरा परिवार संगठित होकर कार्य कर रहा है। कै. अभिमन्यु ने उन छात्र–छात्राओं को भी बधाई दी जिन्हें आज छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए चुना गया है। ये वे छात्र–छात्राएँ हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर विशेष अंक प्राप्त करके अपने विद्यालय और अपने क्षेत्र के विद्यालय में उच्च स्थान प्राप्त किये हैं।

इस अवसर पर चौ. मित्रसेन आर्य के सभी परिजनों की उपस्थिति में परममित्र मानव निर्माण संस्थान के अध्यक्ष कै. रुद्रसेन जी ने गाँव के लोगों के लिए आरो का पानी उपलब्ध कराने के लिए एक प्लांट की आधारशिला रखी। श्रद्धांजलि समारोह से पूर्व यज्ञ का आयोजन किया गया जिसे श्री सहदेव शास्त्री समर्पित सम्पादक शांतिधर्मी जीन्द ने सम्पादित किया। यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में कै. रुद्रसेन जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज सिन्धु के अतिरिक्त उनके भाई श्री वीरसेन सिन्धु, श्री व्रतपाल सिन्धु, कै. अभिमन्यु, मेजर सत्यपाल सिन्धु एवं श्री देव सुमन सिन्धु ने आहुतियाँ देकर यज्ञ को सम्पन्न कराया। इनके अतिरिक्त चौ. दरियाव सिंह, श्री दिलबाग सिंह पटवारी, सरपंच विजेन्द्र आदि ने भी आहुतियाँ प्रदान की।

# ब्रेन अटैक के लक्षणों को पहचानें

**– डॉ. विपुल गुप्ता, डायरेक्टर, न्यूरोइंटरवेंशनल**

दिमाग हमारे शरीर का एक बेहद महत्त्वपूर्ण भाग होता है, या यूं कहिए कि हमारे शरीर का संचालन व नियंत्रण इसी से होता है। अगर दिमाग के किसी भी हिस्से में कोई तकलीफ हो तो उसका प्रभाव शरीर के दूसरे अंगों की गतिविधियों पर भी पड़ता है, लेकिन भागती दौड़ती जीवनशैली ने दिमाग को भी अपने प्रकोप से नहीं बक्शा है। दिमागी समस्याओं और बीमारियों के बारे में बात करने बैठें तो अनगिनत नाम सामने आते हैं। ऐसी ही एक बीमारी है ब्रेन हैमरेज। दिमाग में कमजोर रक्त कोशिकाओं या उनमें सूजन को ऐन्यूरिज्म के नाम से जाना जाता है। ऐन्यूरिज्म के कारण होने वाले रक्तस्राव को, सब आर्क्नायड हैमरेज कहा जाता है। ऐसा माना गया है कि आज की जनसंख्या में 3 से 5 प्रतिशत लोग इंट्राकेनियल एंन्यूरिज्म का शिकार है और 20 में से होने वाला प्रत्येक बंगेन हैमरेज इसी के फटने से होता है। दरअसल, दिमाग में जब भी अचानक से रक्त प्रवाह कम होता है या किसी कारणवश अवरोधिक होता है तो स्ट्रोक होने का खतरा लगातार बना रहता है। ऐसे में ब्रेन हैमरेज या पैरालिसिरा की स्थिति आ सकती है। कभी–कभार दिमाग में रक्तस्राव होने के कारण भी ब्रेन स्ट्रोक की नौबत आ सकती है। स्ट्रोक विश्व में मौत का तीसरा सबसे बड़ा कारण है।

**ब्रेन अटैक के प्रकार – इस्केमिक ब्रेन अटैक :–** दिमाग में किसी भी कारणवश रक्त प्रवाह कम होने से इस प्रकार के अटैक पड़ने का खतरा लगातार बना रहता है। यदि रक्त धमनियों में किसी भी प्रकार के अवरोध या किसी प्रकार का कोई क्लॉट बन जाता है तो उनके द्वारा दिमाग तक पहुंचने वाला रक्त व उसका प्रवाह कम हो जाता है। इसका बड़ा कारण होता है प्लाक का जमावड़ा। प्लाक वसा व अन्य सेलों का मिश्रण होता है जो कि मधुमेह, हाइपरटेंशन, धूम्रपान आदि के कारण बढ़ती उम्र के साथ मरीज के मस्तिष्क में एकत्रित होता रहता है।

**ब्रेन हैमरेज** : हाइपरटेंशन या एन्यूरिज्म से मस्तिष्क में किसी भी प्रकार के रक्त स्राव से यह हो सकता है। कभी कभार मस्तिष्क में कुछ ऐसी खराब नसें विकसित हो जाती हैं जिनमें रक्त प्रवाह अधिक होता है और उसकी वजह से भी ब्रेन हेमरेज हो सकता है।

**ट्रांसिएंट इस्केमिक अटैक** : यह स्ट्रोक लक्षण तो पैदा करते हैं, लेकिन इतने घातक नहीं होते हैं और इनका असर भी कुछ देर का ही होता है। हालांकि अगर किसी को भी ऐसे अटैक हों तो उन्हें भविष्य में ब्रेन स्ट्रोक का खतरा बना रहता है। यदि किसी को ऐसे लक्षण की शिकायत हो तो डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिए।

**लक्षण** : ब्रेन अटैक के लक्षण को समझने के लिए फास्ट एक सरल और प्रभावशाली तरीका है, जिसे हर व्यक्ति के लिए जानना आवश्यक है।

फेस ड्रूपिंग यानी चेहरे का एक तरह से झुकाव या सुन्न हो जाना।

आर्म वीकनेस यानी हाथों में अचानक से सुन्नपन। यदि व्यक्ति से दोनों हाथों को उठाने के लिए कहा जायेगा तो उसकाएक हाथ नीचे की तरफ झुका रहेगा।

स्पीच डिफिकलटी यानी अचानक से बोलने या समझने में दिक्कत। इसमें मरीज को बोलने और दोहराने में परेशानी होती है।

**अतिरिक्त लक्षण** : आंखों से साफ दिखाई न देना, चलने या बैलेंस करने में परेशानी, चक्कर आना, अचानक से सिर में तेज दर्द आदि।

**खतरे कम करने के टिप्स** : द मैनेज ब्लड प्रेशर खान–पान बेहतर रखें। शारीरिक तौर पर फिट रहें। सिगरेट ना पीयें। कालेस्ट्रोल और ब्लड शुगर का ध्यान रखें। वजन को नियंत्रित करें।

**उपचार** : अग्रिम इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसांइसेस, आर्टेमिस हॉस्पिटल, गुरुग्राम के डायरेक्टर न्यूरोइंटरवेंशनल डॉ. विपुल गुप्ता के मुताबिक ओपन तकनीक ऐसी पुरानी तकनीक है जिसमें दिमाग में शल्य चिकित्सा करके नष्ट हुई नस में क्लिप लगाकर रक्तस्राव को रोका जाता था। इस प्रक्रिया में अधिक शल्य प्रक्रिया की जाती थी और रक्तस्राव भी बहुत अधिक होता था व ट्रामा भी होता था, लेकिन अब इंडोवैस्कुलक तकनीक में चिकित्सक पैरों में छोटा सा छेद कर कैथेटर के विशिष्ट प्रकार की क्वायल को कथित नष्ट नस तक पहुंचाया जाता है जो कि रक्तस्राव को बंद कर देती है। इस प्रक्रिया को क्वायलिंग कहा जाता है। इसका फायदा यह है कि शल्य प्रक्रिया कम होती है और बाकी हिस्से को कम नुकसान पहुंचता है।

# गायत्री–गान

–डॉ० रामनाथ वेदालंकार

डॉ० रामनाथ वेदालंकार

वैसे तो सभी वेदमन्त्र अनूठी भावगरिमा से भरे हुए हैं, परन्तु गायत्री मन्त्र भारतीय जनमानस में महामन्त्र के रूप में आदृत हुआ है। मनु ने इसकी महिमा के विषय में लिखा है कि परमेष्ठी प्रजापति ने तीनों वेदों से इसके एक–एक पाद को दुहा है। उन्होंने इसका जप ओंकारपूर्वक तथा भूः, भुवः, स्वः इ नव्याहृतियों–सहित करने का विधान किया है और यह लिखा है कि जो वेदज्ञ विप्र दोनों संध्याकालों में इस मन्त्र का जप करता है उसे वेद पढ़ने का पुण्य प्राप्त हो जाता है।१ यह भी कहा है कि जो द्विज उक्त विधि से एक हजार बार जप करता है, वह महीने–भर में बड़े–से–बड़े पाप से छूट जाता है जैसे, साँप केंचुली से।२ मनु यह भी लिखते हैं वह परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।३

ओ३म् तथा व्याहृतियाँ–सहित लिखने पर प्रचलित गायत्री मन्त्र का यह रूप होता है–

**ओ३म् भूर्भुवः स्वः।**
**तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि।**
**धियो यो नः प्रचोदयात्।।**

–ऋ० ३.६२.१०; यजु० ३.३५, २२.६, ३०.२, ३६.३; साम० १४६२

इस गायत्री के तीन नाम प्रसिद्ध हैं– गायत्री ऋचा, सावित्री ऋचा और गुरु मन्त्र। गायत्री नाम का प्रथम कारण इसका गायत्री छन्द में निबद्ध होना है। जिस छन्द में तीन पाद होते हैं तथा प्रत्येक पाद में आठ–आठ अक्षर होते हैं उसे गायत्री छन्द कहते हैं। यदि किसी पाद में एक अक्षर कम हो अर्थात् ८ अक्षरों के स्थान पर ७ अक्षर हों तो वह छन्द निचृद्गायत्री कहलाता है। प्रस्तुत गायत्री भी निचृद्गायत्री है, यतः इसके प्रथम पाद में ७ ही अक्षर हैं। गायत्री छन्द वाले यद्यपि अन्य भी अनेक मन्त्र हैं तथापि गायत्री छन्द वाले मन्त्रों में अपनी विशेष अर्थगर्भता के कारण प्रस्तुत मन्त्र गायत्री कहा जाने लगा। गायत्री नाम का दूसरा कारण इसका गानार्थक 'गै' धातु से निष्पन्न होना है। इसके द्वारा भक्त भगवान् के तेज की प्राप्ति का गान करता है, अतः इसका नाम गायत्री है। उक्त ऋचा का नाम सावित्री इस कारण है, क्योंकि इसका देवता सविता है, अर्थात् ऋचा सविता विषयक है या सविता के तेज की इसमें प्रार्थना है। इसे गुरुमन्त्र इस कारण कहते हैं, क्योंकि वेदारम्भ संस्कार में गुरु इस मन्त्र के द्वारा ही ज्ञान की प्रथम दीक्षा देता है।

अब विचारणीय यह है कि यदि, जैसा मनु ने कहा है, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद इन तीनों वेदों से इस गायत्री ऋचा का एक–एक पाद दुहा गया है, तो ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक पाद स्वयं में पूर्ण अर्थवाला हो। ऐसा नहीं होना चाहिए कि प्रत्येक पाद को अलग–अलग पूर्ण अर्थवाला न मानकर दूसरे पादों से शब्दों को लेकर अन्वय करें। प्रचलित अर्थ–प्रक्रिया यह है– **(वयम्) सवितुः देवस्य तत् वरेण्यं भर्गः धीमहि, यः नः धियः प्रचोदयात्।** परन्तु इसमें प्रत्येक पाद का स्वतन्त्र अर्थ नहीं रहता, अतः आगे हम इस मन्त्र की ऐसी व्याख्या उपस्थित कर रहे हैं, जिसमें प्रत्येक पाद स्वतन्त्र रहता है।

मन्त्र का देवता 'सविता' है। सविता प्रकृति में सूर्य का नाम है। सूर्य के समान जो परम प्रकाशमान तथा प्रकाश का स्रोत है, वह परमेश्वर सविता है। सविता प्रभु स्वयं ही प्रकाशमान नहीं है, किन्तु सूर्यसम प्रकाशक होकर वह हम मानवों के हृदय में भी अपने उस प्रकाश को प्रेरित करने वाला है। सविता का अर्थ प्रेरक होता है, प्रेरणार्थक 'षू' धातु से यह शब्द बना है।

अब हम मन्त्र के भाव पर आते हैं।४ मन्त्र के तीन भाग किए जा सकते हैं। तीन ही उसके चरण हैं, एक–एक चरण में एक–एक भाग आ जाता है। पहला भाग है– **''तत् सवितुर्वरेण्यम्।''** भक्त अपने भगवान् सविता के तेज और प्रकाश पर मुग्ध होकर कहता है– अहा! देखो, सविता प्रभु की ज्योति कैसी वरणीय है। जो एक बार इसकी झांकी पा ले, वह इस पर लट्टू होकर आनन्द से नाचने लगे। जो एक बार इसके दर्शन कर ले, फिर वह इसे पाने के लिए लालायित हो उठे। सचमुच सविता की ज्योति ऐसी ही उज्ज्वल है। उपनिषत्कार उसकी महिमा का गान करते हुए कहते हैं–

**न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं,**
**नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।**
**तमेव भान्तमनुभाति सर्वं,**
**तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।**

कठ उप० ५.१५

अर्थात् ऐसी दिव्य उसकी ज्योति है कि उसके आगे सूर्य–चाँद–तारे सब फीके पड़ जाते हैं। बिजली की चमक उसके आगे कुछ नहीं, अग्नि की तो बात ही क्या! उसी ज्योति के पुञ्ज में से थोड़ी–सी ज्योति लेकर ये सब चमक रहे हैं।

तो उस ज्योति के लिए इस गायत्री मन्त्र में भक्त कह रहा है कि उस सविता की ज्योति बड़ी स्पृहणीय है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है कि जब कोई व्यक्ति कोई अद्भुत वस्तु देखता है या उसके विषय में सुनता है, तब एकदम उसके मुख से उस वस्तु की स्तुति निकल पड़ती है। वैसे ही उपासक भगवान् की दिव्य ज्योति को देखकर उसकी स्तुति कर रहा है कि उस सविता की ज्योति वरणीय है अर्थात् ऐसी है कि उसे देखकर हर कोई चाहेगा कि यह ज्योति मुझे भी मिल जाए।

**इस गायत्री के तीन नाम प्रसिद्ध हैं– गायत्री ऋचा, सावित्री ऋचा और गुरु मन्त्र। गायत्री नाम का प्रथम कारण इसका गायत्री छन्द में निबद्ध होना है। जिस छन्द में तीन पाद होते हैं तथा प्रत्येक पाद में आठ–आठ अक्षर होते हैं उसे गायत्री छन्द कहते हैं। यदि किसी पाद में एक अक्षर कम हो अर्थात् ८ अक्षरों के स्थान पर ७ अक्षर हों तो वह छन्द निचृद्गायत्री कहलाता है। प्रस्तुत गायत्री भी निचृद्गायत्री है, यतः इसके प्रथम पाद में ७ ही अक्षर हैं। गायत्री छन्द वाले यद्यपि अन्य भी अनेक मन्त्र हैं तथापि गायत्री छन्द वाले मन्त्रों में अपनी विशेष अर्थगर्भता के कारण प्रस्तुत मन्त्र गायत्री कहा जाने लगा। गायत्री नाम का दूसरा कारण इसका गानार्थक 'गै' धातु से निष्पन्न होना है। इसके द्वारा भक्त भगवान् के तेज की प्राप्ति का गान करता है, अतः इसका नाम गायत्री है। उक्त ऋचा का नाम सावित्री इस कारण है, क्योंकि इसका देवता सविता है, अर्थात् ऋचा सविता विषयक है या सविता के तेज की इसमें प्रार्थना है। इसे गुरुमन्त्र इस कारण कहते हैं, क्योंकि वेदारम्भ संस्कार में गुरु इस मन्त्र के द्वारा ही ज्ञान की प्रथम दीक्षा देता है।**

स्तुति के बाद प्रार्थना की बारी आती है। मनुष्य जिसकी स्तुति करता है। उसे फिर अपने लिए मांगता है। इसलिए सविता के प्रकाश की स्तुति के उपरान्त भक्त कह उठता है– **'भर्गो देवस्य धीमहि'।** सविता के जिस प्रकाश की ऐसी स्तुति है हम चाहते हैं कि वह स्पृहणीय प्रकाश हमारे अन्दर भी स्थित हो जाए; उसके दिव्य आलोक से हमारा हृदय भी जगमगा उठे।

मन्त्र का तीसरा भाग है– **'धियो यो नः प्रचोदयात्'।** सविता के प्रकाश को हम अपने अन्दर क्यों धारण करना चाहते हैं? इसलिए कि यह आकर हमारी बुद्धि को प्रेरित कर देवे। मानो हमारी बुद्धि प्रसुप्त पड़ी है, सविता प्रभु का प्रकाश उसे आकर जगा देगा और क्रिया में प्रेरित कर देगा, जैसे कि सविता सूर्य का प्रकाश प्रातः काल आकर सोये हुए प्राणियों को जगा देता है और कर्मों में प्रवृत्त कर देता है। हमारे हृदयों में प्रकाशक व प्रेरक सविता का उदय हो जाने पर हमारी बुद्धि के आगे एक उजाला खिल उठेगा, जिस उजाले में वह गहन–से–गहन विषयों का विवेचन कर सकेगी। हमारे आगे से अज्ञान का अंधेरा मिट जाएगा और ज्ञान–प्रकाश से हमारा अन्तःकरण आलोकित हो उठेगा। जैसे निष्क्रिय पड़ी किसी मशीन को कारीगर आकर प्रेरणा (मरम्मत) दे देता है, फिर वह चल पड़ी है और नयी–नयी वस्तुएँ उस मशीन से बनकर निकलने लगती हैं, वैसे ही निष्क्रिय–सी बनी हुई हमारी बुद्धि नवीन–नवीन कल्पनाओं और नवीन–नवीन विज्ञानों की सृष्टि करने में समर्थ हो सकेगी। सविता के प्रकश की किरण को पाकर हमारी बुद्धि कुण्ठित व किंकर्तव्य–विमूढ़ नहीं रहेगी, अपितु कुशाग्र तथा विवेक की ज्योति से आभासित व स्फुरित हो उठेगी। वैदिक कोष निघण्टु के अनुसार धी शब्द प्रज्ञा और कर्म५ दोनों का वाची है। सविता प्रभु के द्वारा प्रदत्त अन्तः प्रकाश से हमारी बुद्धियाँ और क्रियाएँ दोनों ही लक्ष्य की ओर प्रेरित हो सकेंगी।

यह इस गायत्री मन्त्र का भाव है। इससे हम कल्पना कर सकते हैं कि इस मन्त्र को इतना अधिक गौरवास्पद स्थान क्यों प्राप्त हुआ है और क्यों यह समस्त आर्य जाति का मूलमन्त्र बना हुआ है। 'यह है बुद्धि और ऊर्ध्वगति की स्फुरणा का गीत'। हमने अपने मूल मन्त्र में बढ़िया–बढ़िया स्वादिष्ट भोजन नहीं मांगे, असीम धन–दौलत नहीं मांगी, स्त्री–पुत्र–परिजन नहीं मांगे, मांगी है 'दिव्य प्रकाश से जगमगाती हुई बुद्धि और दिव्यक्रिया'। निःसन्देह वेदमन्त्रों में ऐसी प्रार्थनाएँ हैं कि हमें उत्तमोत्तम भोजन मिलें, भरपूर ऐश्वर्य मिलें, सौ वर्ष की आयु मिले, स्त्री–पुत्र–परिजन मिलें, परन्तु अपने मूलमन्त्र में हमने इन्हें नहीं मांगा है। हमारी मूल मांग है बुद्धि और क्रियाशीलता की। बुद्धि का झरना हमारे अन्दर झर पड़े तो बुद्धि के बल से तथा से अन्य सब ऐश्वर्यों को हम सहज में ही उपलब्ध कर सकते हैं। बुद्धि स्फूर्ति हो गई, सक्रियता, ऊर्ध्वगति एवं लक्ष्य की ओर प्रसरण आ गया तो मानो सब–कुछ मिल गया।

निरुक्त में एक प्रसंग आता है कि जब ऋषि पैदा होने बन्द हो गए तब मनुष्य देवों से बोले–अब कौन हमारा ऋषि होगा, जो हमें मार्ग दर्शाएगा? तब देवों ने उन्हें कहा कि 'तर्क' को ही तुम अपना ऋषि समझो। अर्थात् जिस विषय में तुम्हें संशय उपस्थित हो उसे बुद्धि की कसौटी पर कसकर देख लो। बुद्धि तुम्हारे लिए ऋषि का काम करेगी, किन्तु यदि बुद्धि कुण्ठित हो या अर्ध–निद्रित–सी पड़ी रहने–वाली हो, तब वह ऋषि का काम नहीं कर सकती। इसीलिए इस गायत्री मन्त्र में मनुष्य प्रार्थना कर रहा है कि सविता अपने प्रकाश से हमारी बुद्धियों को प्रकाशित, तीक्ष्ण, सजग व क्रिया में प्रवृत्त कर देवे, जिससे हम पुरुषार्थी होकर सन्मार्ग पर अग्रसर हो जाएँ।

अब इस गायत्री ऋचा के आरम्भ में जो **'ओ३म् भूर्भुवः स्वः'** लगाया गया है, उसका आशय भी देख लेना चाहिए। ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है जो 'अ, उ, म्' के योग से बना है। 'अ' से सृष्टि की उत्पत्ति, 'उ' से उत्पन्न सृष्टि का धारण तथा 'म्' से उत्पादित तथा धारित सृष्टि का अन्त में समय आने पर संहार सूचित होता है, अतः सृष्टि का उत्पादक, धारक एवं संहारक प्रभु 'ओ३म्' है। 'अ, उ, म्' के सम्बन्ध में भी मनु का कथन है कि ये वेदत्रयी से दुहे गए हैं६, अतः ओ३म् तीनों वेदों का सार है। भूः, भुवः, स्वः से क्रमशः पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौ लोक सूचित होते हैं। जैसे सविता सूर्य अपनी किरणों से तीनों लोकों में पहुँचा हुआ है, वैसे ही ओंकारपदवाच्य परमेश्वर भी तीनों लोकों में व्यापक है। इस प्रकार प्रथम परमेश्वर के सृष्ट्युत्पति–स्थिति–संहारकर्ता के रूप को तथा उसके पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्यौ लोक में व्यापक होने के रूप को साक्षात्कार करने के उपरान्त ही भक्त गायत्री ऋचा के गान में प्रवृत्त होता है। भूः, भुवः, स्वः से परमेश्वर की सच्चिदानन्दस्वरूपता भी हृदयंगम होती है। उपासक प्रभु के दिव्य तेज को तीनों लोकों में सर्वत्र फैला हुआ देखकर कहता है कि यह तो सबके लिए बड़ा ही वरणीय है, ग्राह्य है। फिर दूसरे चरण में कहता है कि मैं चाहता हूँ यह तेज मुझे भी मिल जाए, मेरे अन्दर स्थित हो जाए। फिर तीसरे चरण में कहता है कि वह सविता प्रभु अपने तेज से मेरी बुद्धि एवं मेरे कर्म को आलोकित कर दे, दिव्यता की ओर प्रेरित कर दे।

# कौन मजबूत और कौन मजबूर

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

भाजपा की राष्ट्रीय समिति के अधिवेशन पर मायावती और अखिलेश का गठबन्धन काफी भारी पड़ गया। गठबन्धन की खबर अखबारों और टीवी चैनलों पर खास खबर बनी औरउसे सर्वत्र पहला स्थान मिला जबकि मोदी और अमित शाह के भाषणों को दूसरा और छोटा स्थान मिला। भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेताओं का तो कहीं जिक्र तक नहीं है। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि यह अकेला प्रादेशिक गठ बन्धन राष्ट्रीय राजनीति को नया चेहरा दे सकता है। मोदी के 80 मिनट के भाषण में भी इसी गठबन्धन की सबसे ज्यादा मजाक उड़ाई गई। मोदी ने बिल्कुल ठीक सवाल देश के करोड़ों मतदाताओं से पूछा। उन्होंने पूछा कि आप कैसी सरकार चाहते हैं? मजबूत या मजबूर? गठबन्धन की सरकार यदि बन गई तो वह मजबूत तो हो ही नहीं सकती। वह तो मजबूर ही रहा करेगी। मोदी यहां यह मानकर चल रहे हैं कि उन्हें 2019 की संसद में स्पष्ट बहुमत मिल जायेगा। कैसे मिल जायेगा, वह यह नहीं बता सकते यानि अपने भविष्य को ही वे खुद देख नहीं पा रहे हैं। दूसरा प्रश्न यह भी कि मजबूत यानि क्या? कोई सरकार यदि पांच साल तक देश की छाती पर लदी रहे तो क्या उसे आप मजबूत कहेंगे? ऐसी मजबूती को देश चाटेगा क्या? ऐसी सरकारें अपनी मूर्खताएं बड़ी मजबूती से करती हैं। जैसे इंदिरा गांधी ने आपातकाल ठोक दिया था, राजीव गांधी ने भारत को बोफोर्स और श्रीलंका के दल–दल में फंसा दिया था और नेहरू चीन से मात खा गये थे। हमारे प्रधान सेवक जी ने नोटबंदी, जीएसटी, फर्जीकल स्ट्राइक, बोगस आर्थिक आरक्षण, रफाल–सौदा, हवाई विदेशी घुमक्कड़ी आदि कई कारनामे कर दिए। औरंगजेबी शैली में अपने पितृतुल्य नेताओं को बर्फ में जमा दिया। पार्टी मंचों पर चाटुकारिता को उत्कृष्ट कला का दर्जा दे दिया। क्या यह मजबूती का प्रमाण है? अटल जी की सरकार गठबन्धन की सरकार थी और अल्पजीवी थी लेकिन उसने भारत को परमाणु शक्ति बना दिया। बाद में उसने कारगिल युद्ध भी लड़ा और कश्मीर को हल के समीप पहुंचा दिया। जो मजबूत काम करे, वह सरकार मजबूत होती है, पांच साल तक रोते–गाते घिसटने वाली नहीं। मोदी को अपने भविष्य का पता अभी से चल गया है, इसीलिए उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं से साफ–साफ कह दिया है कि अब मोदी के नाम पर वोट नहीं मिलने वाले हैं, आपको हर मतदान केन्द्र पर डटना होगा। वे तो डट जायेंगे लेकिन वे वोटर कहां से लायेंगे? मोदी का यह कहना तो ठीक है कि गठबन्धनों और महागठबंधन का लक्ष्य सिर्फ एक है, मोदी हटाओ। आपने भी कांग्रेस मुक्त भारत का नारा दिया था कि नहीं। इसमें भी शक नहीं कि सारे गठबन्धन अवसरवादी होते हैं लेकिन क्या आप खुद गठबन्धन में नहीं बंधे थे? आपने भी सोनिया–मनमोहन हटाओ के अलावा क्या किया? जो फसल पहले आपने काटी, वही अब वे काटेंगे।

# विश्व पर्यावरण समस्या और यजुर्वेद

– डॉ. हरीश कुमार 'बन्धु'

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान की दृष्टि से आज विश्व समाज प्रतिदिन नवीन उच्च शिखर का स्पर्श कर रहा है। इस वैज्ञानिक विकास से मानव अन्यान्य ग्रह नक्षत्रों पर भी अपनी उपस्थिति प्रदर्शित कर चुका है। मानव जीवन सुख सुविधा सम्पन्न बन रहा है। किन्तु प्रश्न यह है कि इस चतुर्दिक विकास के चलते भी क्या मानव जीवन निरापद एवं निष्कण्टक है? प्रत्युत्तर होगा, नहीं।

शतायु पुरुष अकाल ही काल कवलित हो रहा है तो क्यों? इतनी वैज्ञानिक उन्नति के उपरान्त भी हम असहाय क्यों हैं? क्यों नित्यप्रति असाध्य रोगों की ओर हम अग्रसर हो रहे हैं? कैंसर जैसे असाध्य रोग के सही उपचार की हम खोज ही कर पाये हैं कि 'एड्स' नाम महामारी सम्पूर्ण विश्व को अपने में समाहित करने के लिए सुरसावत् विकराल रूप में हमारे समक्ष खड़ी है, तो क्यों? इसका एक ही उत्तर हमें मिलेगा – प्रकृति से असामांजस्य। प्रतिफल पर्यावरण समस्या।

आज वैज्ञानिक वेद–विज्ञान को विस्मृत कर चुके हैं। वेद विज्ञान की विस्मृति का प्रतिफल स्वयं वैदिक ऋचा प्रस्तुत करते हुए कहती है –

**यस्तित्याज सचिविदं सखायं, न तस्य वाच्यपि भागोऽस्ति।**

**यदीं शृणोत्यलकं शृणोति, न हि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।।**

– ऋग्वेद 10.71.6

अर्थात् जो मनुष्य अपने परमप्रिय मित्र परमात्मा की हिकारिणी वेद वाणी को त्याग देता है, विस्मृत कर देता है अथवा उपेक्षा कर देता है, वह वेदवाणी के परमोपयोगी लाभ से वंचित हो जाता है।

वस्तुतः विश्व पर्यावरण की समस्या पंच महाभूतों से सम्बन्धित है। रासायनिक पदार्थों का उत्सर्जन, वनों का विनाश, वैदिक यज्ञ विधि का परित्याग आदि ऐसे अनेक कारण हैं, जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। इन सबमें प्रधानभूत कारण है – वनों का विनाश।

पर्यावरण 'शब्द' कर हलायुध कोश में 'फलक' अर्थ दिया गया है, जिसका सामान्य भाषा में अर्थ है – ढक्कन। पर्यावरण एक ऐसा फलक है जो समस्त ब्रह्माण्ड को स्वयं में समाहित करके हमें सुरक्षा प्रदान करता है। किन्तु यह सुरक्षा कैसे हो, इसका समाधान स्वयं वेद जगत को वृक्ष बता कर करता है –

**देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत्।**

**दिवमग्रेणातपृशदान्तरिक्षं पृथिवीमदृँहीद्वसुवने वसुधेयस्य वेतुर्यज।।**

– यजु. 28/20

सुनहरे पत्तों वाला, मधुर शाखाओं वाला और अच्छे फल वाला, दिव्य संसार रूपी पिप्पल वृक्ष दिव्य गुणों द्वारा दिव्य जीव को बढ़ाता है।

उक्त मंत्र की द्वितीय पंक्ति इसकी उपादेयता को सिद्ध करते हुए कहती है कि संसार रूपी वृक्ष अपने प्रथम तेज से द्युलोक का स्पर्श करता है, मध्य भाग से अंतरिक्ष को तथा अंतर्भाग से पृथिवी को दृढ़ करता है। उक्त मंत्र में संसार रूपी वृक्ष की 'सुपिप्पल' संज्ञा दी गई है।

सुपिप्पल का समानार्थी पद है – 'अश्वत्थ वृक्ष'। वेदवाणी का अनुसरण करते हुए ही गीता में श्रीकृष्ण अपने विराट रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं – 'अश्वत्थः सर्व वृक्षाणाम्।' स्वयं को 'अश्वत्थ' वृक्ष कहकर वे मानो वृक्षों के महत्त्व के प्रति हमको जागृत कर रहे हैं।

अश्वत्थ वृक्ष की महत्ता को स्पष्ट करते हुए यजुर्वेद की ऋचा कहती है –

**''अश्वत्थे वो निषदनम् पर्णे वो वसतिष्कृता।''**

– यजु. 35/4

'हे जीव, अश्वत्थ वृक्ष पर तेरा अधिष्ठान है किन्तु इस पर पर्ण सदृश तुम्हारा गृह है।'

इस मन्त्र में वेद हमारे घर को 'पर्ण' (पत्ते) के समान अस्थिर बताकर वस्तुतः हमको चेतावनी दे रहा है यदि इस वृक्ष के सम्पर्क से तुम दूर हुए तो जीवन से भी दूर हो जाओगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज हम विश्वपर्यावरण की जिस विकराल समस्या का सामना कर रहे हैं, इसका मूल कारण वेद की इस चेतावनी को अनसुना करना ही है।

विश्व की संरचना वृक्षों के बिना संभव नहीं है। इसका प्रतिपादन करते हुए वेदमंत्र कहता है –

**किंस्विद्वनं क उ स वृक्षऽआस यतो द्यावा पृथिवी निष्टतक्षुः।**

**मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्।।** – यजु. 17/20

कौन सा वह वन या कौन सा वह वृक्ष है जिस आधार पर विश्वकर्मा ने द्युलोक एवं पृथिवी की संरचना की है।

अथ च – **नमो वृक्षेभ्यः** (यजु. 16/17), **वृक्षाणां पतये नमः** (यजु. 16/19), **वनानां पतये नमः** (यजु. 16/18) आदि मंत्राश हमें प्रतिपल वनों के संवर्धन, संरक्षण एवं वृक्षारोपण का संदेश देते हैं।

वनों के संवर्धन एवं संरक्षण पर ही मानव जीवन निर्भर है क्योंकि ये वन ही औषधियों के जनक हैं। औषधेः त्रायस्व (यजु. 4/1) हे औषधि। हमारी रक्षा करो 'वचन के द्वारा वेद इन औषधियों का महत्त्व प्रतिपादित करता है। किन्तु हम इन औषधियों का विनाश करके स्वयं का ही विनाश कर रहे हैं।

वेद पुनः चेतावनी देता है – **मौषधीहिंसीः** (यजु. 6/22) औषधियों को नष्ट मत करो।

यदि हम वनौषधियों का हम संपोषण करें तो वेद औषधि से कहता है –

**दीर्घायुस्तऽऔषधे खनिता।** (यजु. 12/100)

हे औषधि! तेरा खोदने वाला दीर्घायु प्राप्त करे।

इन औषधियों का संपोषण कैसे हो? इनका समाधान भी वेद करता हुआ कहता है –

**वनस्पतयश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्।** (यजु. 18/13)

अथ च आरण्याश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्। अर्थात् अरण्य अथवा वनस्पतियों का यज्ञ के द्वारा संपोषण करो। यजुर्वेद के 22वें अध्याय के 28वें मंत्र में वृक्ष के पुष्प, फल, शाखाओं, मूलों एवं वनस्पतियों के लिए यज्ञ को ही उत्तम क्रिया माना है। ........ **मूलेभ्यः स्वाहा, शाखाभ्यः स्वाहा, वनस्पतिभ्यः स्वाहा.....।।** यजु. 22/28

यज्ञ की इस उपदेयता के कारण ही वेद ने कहा – **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।**

यदि हम विश्वपर्यावरण समस्या से मुक्ति चाहते हैं तो निश्चय ही हमें वेदमार्ग का अनुसरण कर वनों का संवर्धन एवं संरक्षण करना चाहिए।

**नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

**वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**

# मनुर्भव की सन्देश वाहक पुस्तक का लोकार्पण

जयपुर, मानव निर्माण एवं विश्व शांति संस्थान, जयपुर के तत्वावधान में गोवर्धन लाल गर्ग एडवोकेट के द्वारा लिखित पुस्तक 'हमारा जीवन कैसा हो, वैदिक मार्ग पर चलने वालों जैसा हो' का लोकार्पण हुआ।

मुहाना मण्डी रोड स्थित सैनी नर्सिग कॉलेज के संस्कार भवन में आयोजित भव्य समारोह में लोकायुक्त (राजस्थान) माननीय सज्जन सिंह कोठारी ने लोकार्पण करते हुए अपने उद्‌बोधन में वेदों को सम्पूर्ण विज्ञान एवं सभी सत्य विद्याओं का ग्रन्थ एवं आदि स्रोत बताया। उन्होंने कहा कि वेदों में छन्द एवं अलंकार इस प्रकार है जिनमें मिलावट और परिवर्तन की संभावना ही नहीं।

पुस्तक के लेखक एडवोकेट गोवर्धनलाल गर्ग ने अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहा कि वेद ऐसे ज्ञानामृत का भण्डार है जो मानव को मानव बनाने में अद्वितीय हैं। उन्होंने कुशल संपादन व प्रकाशन के लिए श्री प्रभाकर देव का आभार व्यक्त किया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष श्री यशपाल 'यश' ने वेदों को मानव निर्माण एवं विश्व शांति का संविधान किंवा एनसाईक्लोपीडिया की संज्ञा दी।

समारोह के आरम्भ में मुख्य अतिथि लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह जी कोठारी, आचार्य उषर्बुद्ध श्री प्रभाकर देव आर्य राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य ब्रह्म सिंह गूजर, अजय कुमार आर्य निजी सचिव योग गुरु बाबा रामदेव तथा डॉ. सुमित्रा आदि विशिष्ट अतिथियों का स्वागत श्री राम किशोर शर्मा तथा पूर्व जिला जज चन्द्रभान एवं संस्थान अध्यक्ष श्रीमती मधुरानी यश, श्रीमती सुशीला, वेदवती, डॉ. राखी एवं आस्था ने किया।

समारोह का यशपाल यश ने कुशल मंच संयोजन किया। समापन से पूर्व डॉ. शुभकाम आर्य व डॉ. प्रमोदपाल ने अतिथियों का तथा समारोह के साक्षियों का आभार व्यक्त किया। सहभोज के साथ समारोह विसर्जित हुआ।

समग्रतः आज के जन सामान्य की जीवनशैली/दिनचर्या प्रकृति के अनुसार नहीं है, परिणामतः अनेक असाध्य रोग पनप रहे हैं, जिनके निवारण/उपचार में ही समय और धन व्यय होता है। पुस्तक के लेखक का मंतव्य विशुद्ध पारमार्थिक है। प्रकृति से जीवनशैली को जोड़कर अनेक असाध्य व्यथाओं से बचा जा सकता है।

**— ईश्वर दयाल माथुर**

## हर्षोल्लास के साथ मकर संक्रांति पर्व मनाया

मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर आर्य समाज सागर द्वारा यज्ञ हवन, प्रवचन उपरान्त सार्वजनिक खिचड़ी वितरण एवं जरूरतमंद बच्चों को कपड़े वितरित किये गये। इस अवसर पर आर्य समाज सागर के उपप्रधान श्री महादेव प्रसाद जी, श्री बद्री प्रसाद सोनी, मंत्री श्री अजय कुमार पुरोहित श्री प्रमोद कुमार पाठक व आर्य कन्या उ. मा. वि. की प्रधानाध्यापिका श्रीमती हेमलता पाखरे व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

— मंत्री, आर्य समाज, सागर (म. प्र.)

## आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर–7 का

## वार्षिक निर्वाचन

| | | |
|---|---|---|
| 1. | प्रधान | — श्री रामजी आर्य |
| 2. | मंत्री | — श्री अजय गुप्ता |
| 3. | कोषाध्यक्ष | — श्री प्यारे लाल आर्य |

## '''Social Media '''पर ''''आर्य समाज '''' की नई पहल

नमस्ते आर्यजन

2 मिनट 'मिशन आर्यावर्त' के लिए जरूर दें।

आर्यजन हमने मिशन आर्यावर्त के whats app न्यूज बुलेटिन को शुरू किया है। जिसका बहुत सुंदर परिणाम मिला।अब तक लगभग 40 हजार whats app नंबर पर हर सप्ताह हम इसको शेयर करते हैं। इसके माध्यम से हम देश दुनिया में आर्य समाज के सकारात्मक स्वरूप को ले जाना चाहते हैं। आज आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है परन्तु उसको सामूहिक रूप से प्रसारित नहीं कर पा रहा। इस बुलेटिन के माध्यम से हम सम्पूर्ण आर्य जगत की गतिविधियों को शामिल करके आप लोगों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभी इस बुलेटिन को सप्ताह में सिर्फ एक दिन प्रचारित व प्रसारित करने का विचार है वो भी रविवार को। इससे जुड़ने के लिए आपको दो कार्य करने है :–

(1) आपको अपना whats app नम्बर अपने नाम व स्थान के साथ लिख कर हमारे पास भेजना है।

ताकि आपको निरंतर बुलेटिन मिलता रहे।

(2) आपको अपना समाचार फोटो के साथ व संक्षिप्त जानकारी के साथ हमारे whats app नम्बर पर भेजना है। ताकि हम उसको whats app बुलेटिन में शामिल कर सकें। इनको आप ग्रुप में पोस्ट न करके सीधे हमारे whats app पर पोस्ट करेंगे।

'''कुछ समय के बाद हम इसका

वीडियो version भी तैयार करेंगे।

''''हमारा दूसरा कार्यक्रम'''

आर्य विचार मंथन

मेरे सात सवाल जिसमे लगभग 15 मिनट का किसी एक आर्य संन्यासी,नेता व विद्वान का साक्षात्कार होगा। जिसमे आर्य समाज के विषय पर उनके विचार लिए जायेंगें।

प्रतिदिन वेद, रामायण ,महाभारत, योग, चाणक्य, हितोपदेश आदि पर सुविचार भी आप तक भेजे जायेंगे। हमारा whats app नम्बर 9354840454 है। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। आपसे निवेदन है के आप इस सन्देश को ज्यादा से ज्यादा साथियों तक प्रचारित व प्रसारित करें ताकि मिशन आर्यावर्त के संकल्प को मजबूती मिल सके। यदि आप मिशन आर्यावर्त का हिस्सा बनना चाहते हैं हमारे साथ कार्य करना चाहते हैं तो भी आप सम्पर्क जरूर करें।

— ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

## सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित अनुपम साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध

**33 पुस्तकों का 620/– रुपये का सैट**
**मात्र 370/– रुपये में प्राप्त करें**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | यजुर्वेद | 250.00 | 17. | वेद का इस्लाम पर प्रभाव | 3.00 |
| 2. | बन्दा वीर बैरागी | 18.00 | 18. | वैदिक धर्म की रूपरेखा | 22.00 |
| 3. | आस्तिक नास्तिक संवाद | 7.00 | 19. | वैदिक कोष संग्रह | 15.00 |
| 4. | वेद संदेश | 10.00 | 20. | विवेकानन्द विचार धारा | 8.00 |
| 5. | आत्मा का स्वरूप | 8.00 | 21. | विषलता इस्लाम की फोटो | 8.00 |
| 6. | आचार्य शुक्रराज शास्त्री | 5.00 | 22. | वैदिक सिद्धान्त | 20.00 |
| 7. | आर्य ध्वज | 3.00 | 23. | धर्मान्तरण | 10.00 |
| 8. | आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या | 20.00 | 24. | नारायण स्वामी जीवनी | 8.00 |
| 9. | गो–हत्या या राष्ट्र हत्या | 15.00 | 25. | काशी शास्त्र | 3.50 |
| 10. | दयानन्द वचनामृत | 5.00 | 26. | आदर्श त्रैतवाद | 35.00 |
| 11. | इक्कीसवीं सदी का भारत | 4.00 | 27. | ब्रह्म उपासना | 8.00 |
| 12. | मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–1, 2 | 20.00 | 28. | वेद निबन्ध स्मारिका | 30.00 |
| 13. | मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–3, 4 | 15.00 | 29. | आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र | 20.00 |
| 14. | वेदांग प्रकाश | 20.00 | 30. | श्रद्धांजलि | 12.00 |
| 15. | वैदिक सूक्ति सुधा | 5.00 | 31. | शिखों का तुष्टिकरण | 2.00 |
| 16. | वेद और आर्य शास्त्रों में नारी | 4.00 | 32. | एक ही मार्ग | 3.00 |
| | | | 33. | मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र | 4.00 |

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तो उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

''दयानन्द भवन'', 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :— 011–23274771, 23260985

## महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब) दूरभाष :– 9814629410

## प्रवेश सूचना सत्र–2019–2020

छठी कक्षा में (आयु +9 से –11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/– रुपये) भरकर 31 मार्च, 2019 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 7 अप्रैल, 2019 दिन रविवार को प्रातः 8 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

**— मोहन लाल कालड़ा, मैनेजर**

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [ U (c)-289/2018-20 ]

**सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें**

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
बलमुपास्व्

# सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

एवं

## आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की

स्वामी इन्द्रवेश

## स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

# स्वर्ण जयन्ती समारोह

## दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

**स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)**

## कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण

- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
- स्मारिका का विमोचन
- कर्मठ कार्यकर्ताओं का सम्मान
- आगामी 50 वर्षों के कार्यों की घोषणा।
- 50 वर्ष के इतिहास पर डोक्यूमेंट्री फिल्म।
- व्यायामाचार्यों एवं योग शिक्षकों का सम्मान
- 50 जीवनदानी कार्यकर्ता तैयार करने का लक्ष्य।
- परिषद् के संस्थापकों एवं सहयोगियों का सम्मान
- पिछले 50 वर्षों की ऐतिहासिक गतिविधियों की प्रदर्शनी।
- 'राजधर्म' मासिक पत्रिका के पिछले 50 वर्षों में प्रकाशित महत्वपूर्ण अंकों की प्रदर्शनी।
- स्वामी इन्द्रवेश जयन्ती समारोह एवं चतुर्वेद महायज्ञ पूर्णाहुति कार्यक्रम 9 मार्च, 2019 को।

**आयोजक**

**युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा**

**9416630916, 9354840454, 9468165946**

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।